



### शोक संदेश

हिंदी के प्रतिष्ठित कवि, आलोचक, फिल्म समीक्षक, अनुवादक, पत्रकार तथा हिंदी अकादमी, दिल्ली के उपाध्यक्ष विष्णु खरे का ब्रेन हेमरेज के कारण जी.बी. पंत अस्पताल, दिल्ली में कल निधन हो गया। उनका जन्म छिंदवाड़ा जिले में 9 फरवरी 1940 को हुआ था। जीविका के लिए उन्होंने अध्यापन और पत्रकारिता को अपनाया। कुछ वर्षों तक उन्होंने साहित्य अकादेमी के उपसचिव के पद पर भी काम किया था। मौलिक लेखन और संपादन के अलावा विष्णु खरे ने विश्वस्तरीय प्रमुख कवियों की कविताओं के चयन और अनुवाद का विशिष्ट कार्य किया। सुप्रतिष्ठित अंग्रेजी राष्ट्रीय दैनिक 'द पायनियर' में उन्होंने नियमित रूप से फिल्म तथा साहित्य पर स्तंभ लेखन भी किया।

विष्णु खरे की प्रकाशित कृतियों में 'एक गैर रुमानी समय में', 'विष्णु खरे की कविताएँ', 'खुद अपनी आँख से', 'सबकी आवाज़ के पर्दे में', 'काल और अवधि के दरमियान', 'पिछला बाकी', 'और अन्य कविताएँ' तथा 'आलोचना की पहली किताब' शामिल हैं। उनकी अनुवाद कृतियों में 'मरु प्रदेश और अन्य कविताएँ' (टी. एस. इलियट की कविताओं का अनुवाद), 'यह चाकू समय', 'हम सपने देखते हैं', 'कालेवाला' (फिनलैंड का महाकाव्य) तथा 'द पीपुल्स एंड द शेल्फ' (प्रमुख हिंदी कवियों की कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद) प्रमुख हैं। साहित्य-सेवा के लिए विष्णु खरे को नाइट ऑफ़ दि व्हाइट रोज़ सम्मान, शिखर सम्मान, साहित्यकार सम्मान (हिंदी अकादमी, दिल्ली), रघुवीर सहाय सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान आदि पुरस्कार-सम्मानों से विभूषित किया गया था।

विष्णु खरे के निधन से हिंदी कविता, दृष्टिसंपन्न फिल्म समीक्षा तथा अनुवाद के क्षेत्र में एक शून्य व्याप्त हो गया है, जिसकी भरपाई शायद संभव नहीं है। साहित्य अकादेमी उनके निधन पर गहरी संवेदना प्रकट करती है।

(के. श्रीनिवासराव)